CHETANA
International Journal of Education
Impact Factor
SJIF-5.689
Peer Reviewed/
refereed Journal
ISSN-
Print-2231-3613,
Online-2455-8729

Prof.A.P.Sharma (25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 20th April 2020, Revised on 22nd April 2020, Accepted 24thApril 2020

आलेख

जाम्भोजी की वाणी में पर्यावरण

* **अशोक धारणिया**, *शोधार्थी*
** **डॉ. पूजा धमीजा**, *शोध निदेशक*
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
Email: rajaramdharniaauto@yahoo.com, Mob. - 9413388479

मुख्य शब्द *- वायु, जल, प्रकाश, मृदा, वनस्पति, पारिस्थिति तन्त्र आदि.*

पर्यावरण शब्द का अर्थ परि+आवरण से हुआ है। जिसका शाब्दिक अर्थ है परिधीय आवरण अर्थात् परिवेश, आस–पास या चारों ओर का भौतिक संसार।

मानव या अन्य कोई पारिस्थितिक तन्त्र का जीव, जन्तु या वनस्पति के चारों ओर के प्राकृतिक, भौतिक आवरण का परिवेश पर्यावरण होता है। प्रकृति में जो कुछ भी हमारे आसपास परिलक्षित होता है जैसे – वायु, जल, प्रकाश, मृदा, वनस्पति आदि सभी सम्मिलित रूप में पर्यावरण कहलाता है। जाम्भोजी की वाणी में प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति मानव को पूर्ण जागरूक करते हुए अपनी वाणी एवं धर्म नियमों में हरे वृक्षों को न काटना व वन एवं वन्य जीवों का संरक्षण प्रदान कर पारिस्थिति तन्त्र को सन्तुलित रख कर पंच भूतों से उत्पन्न सृष्टि को सभी के लिए ''जीओ और जीने दो'' के मंत्र के रूप में दिया है। जाम्भोजी ने पंच महाभूत तत्त्वों से सम्पूर्ण सृष्टि का सृजन माना है।

इन्हीं पांचों तत्त्वों के पंचीकरण कर देने से इन्हीं पांचों तत्त्वों से सम्पूर्ण सृष्टि का सृजन होता है। इन्हीं पांचों तत्त्वों से सृष्टि बाहर नहीं है। इन्हीं पांचों तत्त्वों के अन्तर्गत सम्पूर्ण सृष्टि है।

अर्थात् जाम्भोजी के **पर्यावरण विषयक गुण** इन सम्पूर्ण पंचमहाभूतों की शुद्धता एवं संतुलन ही सृष्टि का शुद्ध पर्यावरण है। अर्थात् वायु, जल, सूर्य, पृथ्वी एवं अग्नि पांचों की शुद्धता एवं साम्यता सम्पूर्ण सृष्टि के जीव जगत के अस्तित्व के लिए जरूरी है। जाम्भोजी के पर्यावरण विषयक विचारों में उन्होंने अपनी वाणी में सृष्टि निर्माण के पूर्व की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा है कि –

न हुंती वंणी अढारा भारूं

अर्थात् तब 18 भार वंणी (वनस्पति) नहीं थी। "अहं ब्रह्मास्मि" रूप में वे कहते हैं कि –

मोरै धरती ध्यांन वणासपति वासौ

अर्थात् मैं धरती का ध्यान रखता हूँ। वह मेरे ध्यान में है और वनस्पति में मेरा वास है। इसलिए वनस्पति को कभी नहीं काटना चाहिए और विशेषकर कुछ विशिष्ट दिनों में तो उन्होंने बिल्कुल ही घाव न करने का आदेश दिया है।

सोम अमावस आदितवारी;

कांय काटी वंणरायौ ?

इस उक्ति में जाम्भोजी ने जीव के सुकृत एवं वर्जित कृत्यों पर जीव से प्रश्न किया है। अर्थात् रात्रि में, अमावस्या और रविवार को वनस्पति को क्यों काटा ? उन्होंने अपने अनुयायियों को धर्म की आचार–संहिता में भी कहा है कि –

"जीव दया पालणी, रूंख लीलो नहीं घावै।"

जाम्भोजी के अनुयायियों ने इस धर्म नियम का अक्षरशः पालन करते हुए अपने प्राणों की बलि तक दी है। उक्त आदेश में जाम्भोजी ने जीवों पर दया करनी चाहिए और हरे वृक्षों पर आघात करना, काटना और उसको किसी प्रकार का नुकसान पहुँचाना सर्वथा वर्जित कहा है। उनमें भी चेतन शक्ति है, जीव है। इसलिए हरे पेड़ वनस्पति के प्रतीक हैं। अतः उनकी रक्षा करना परम कर्तव्य है।

जाम्भोजी ने अपनी वाणी में समस्त वनस्पति एवं सजीव जगत की योनियों में ब्रह्म का निवास बताया है। उन्होंने अपनी वाणी में समस्त सजीव जगत की विभिन्न योनियों का वर्णन इस प्रकार किया है –

"सेतत सेतूं जेरज जेरूं इंडज इंडू, अइयालो उरधज खांणी"

अर्थात् समस्त योनियों में वहीं परब्रह्म परिभाषित हो रहा है। स्वेदज में स्वेद रूप में, जरायुज में जरायु रूप में, अण्डज में अण्डे के रूप में और उद्भिज में वनस्पति के रूप में। इस तत्त्व में परब्रह्म रमा हुआ है। यही बात मनुस्मृति के अध्याय 1 में उल्लेखित है। मनुस्मृति में जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज चार प्रकार की जीव योनियाँ मानी गई हैं।

आज से लगभग साढ़े पांच सौ वर्ष पहले बिश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक भगवान जाम्भोजी ने अपनी अमृत वाणी व उपदेशों से प्रकृति संरक्षण के बारे में अवगत कराया था। जाम्भोजी परम सत्ता के रूप में पर्यावरण के पर्याय बनकर इस धरा पर अवतरित हुए। उन्होंने अपने धर्म नियमों की रचना पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से की। जो प्रत्येक व्यक्ति, जीव, स्थूल, सूक्ष्म, जड़–चेतन आदि के लिए सार्थक तथा उपयोगी है। जाम्भोजी ने अपने सिद्धान्तों में अहिंसा तथा प्रकृति संरक्षण को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। पर्यावरण तथा जीव रक्षा का प्रकृति से प्रत्यक्ष संबंध है। उन्होंने अपनी वाणी में न केवल वृक्षों की रक्षा की बात कही, अपितु समस्त सजीव जगत के जीवों, पशु–पक्षियों के संरक्षण को मनुष्य मात्र का धर्म बताया है। जाम्भोजी ने निरीह अबोल जीवों को मारने वालों को चेतावनी देते हुए कहा था कि जीवों पर जबरदस्ती आघात करने वालों का अंत समय बहुत दुःखदायी होगा –

काहे काजै गऊ विणासौ,

तो करीम गऊ क्यों चारी ?

कांही लीयो दूंधूं दहियूं ?

कांही लीयो घीयौं महियूं ?

कांही लीयो हाडूं मांसूं ?

कांही लीयो रगतूं रुहियूं ?

सुंणि रे काजी सुंणि रे मुल्ला;

या मां कूंण भया मुरदारी ?

जीवां ऊपरि जोर करीजै;

अंति काळ हुयसी भारी।

मलेच्छ, मुस्लिम, ईसाइयों को गोहत्या पर फटकारते हुए वाणी में उपरोक्त बातों में यह कहा गया है कि गाय की हत्या करने को आप मोहम्मद साहब के नाम पर जायज ठहराते हो। यह सत्य कथन नहीं है क्योंकि मोहम्मद साहब ने स्वयं गायों का पालन किया और गायों को वन में चराया था। फिर गाय की हत्या करते हो तो फिर उस निरीह अबोल पशु का दूध, दही, घी, मठा आदि क्यों पीते हो? क्यों उसका हाड, मांस, रक्त लेते हो? हे काजी! हे मुल्ला! सुनो और बताओ इनमें कौन अपवित्र है, गाय या तुम मारने वाले? अर्थात् इसमें मरे हुए जीवों को खाने वाला कौन है? यदि निरीह, अबोल पशुओं, जीवों पर बल प्रयोग करोगे तो तुम्हारा अंत

समय दुःखदायी होगा, कष्टदायी होगा। तुम्हें अपनी करनी का फल भोगना पड़ेगा। जाम्भोजी ने गोहत्या को ही निषिद्ध नहीं बताया बल्कि प्राणी मात्र की रक्षा के लिए कटिबद्ध रहने का आदेश अपनी शिक्षाओं में दिया है। जाम्भोजी के उपदेश का पालन करते हुए बिश्नोई धर्म के अनुयायियों ने भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के समक्ष पर्यावरण की रक्षा के लिए अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। वृक्षों व हिरणों तथा अन्य वन्य प्राणियों की रक्षा का उत्तरदायित्व बिश्नोइयों ने अति उत्साह व लगन से निभाया है। विश्व इतिहास में प्राकृतिक एवं जैव सम्पदा को बचाने के लिए सिर्फ जाम्भोजी के अनुयायी बिश्नोई मत को मानने वालों द्वारा ही बलिदान दिए गए हैं।

गुरु जाम्भोजी की इस धारणा को मद्देनजर रखते हुए ग्राम खेजड़ली (जोधपुर) में 84 गांवों के 363 बिश्नोई जन (69 महिलाओं और 294 पुरुषों) ने स्वेच्छा से हरे वृक्षों की रक्षार्थ अपने प्राणों की बलि दी थी। यह घटना जोधपुर के पास के खेजड़ली ग्राम में विक्रमी संवत् 1787 (सन् 1730 ईस्वी) को घटित हुई थी, जो विश्व में वृक्षों की रक्षार्थ अभूतपूर्व सत्याग्रह स्वरूप बलिदान माना जाता है। इस घटना के अतिरिक्त ऐसे कई उदाहरण अन्यत्र भी उपलब्ध हैं ।

खेजड़ली बलिदान (खेजड़ली, खडांणा) खेजड़ली बलिदान विषयक ब्यौरा गोकल जी द्वारा रचित्त साखी खेजड़ली नामक एक लघु ऐतिहासिक काव्य कृति में मिलता है। गोकल जी(1700 से 1790) की साखी का रचनाकाल 1787 है। इसी आधार पर यह चरितार्थ होता है कि उक्त घटना का लेखक प्रत्यक्ष गवाह रहा होगा। जोधपुर के धर्म रक्षक, वन रक्षक महाराजा अजित सिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र अभयसिंह के शासनकाल में राज्य के हाकिम गिरधरदास भंडारी ने पैसों के लिए खेजड़ली गांव के खेजड़ियों के वन को काटने का विचार किया। इस वन के आसपास बिश्नोइयों का निवास था। बिश्नोइयों के रोकने पर उसने कहा, यदि प्रण रखना है या धर्म रखना है तो पैसे दो। इस पर उन्होंने वृक्षों के बदले अपने सिर देने का संकल्प किया। राज आज्ञा तोड़कर उसने वन कटवाना आरंभ कर दिया। इस पर अनेक गांवों के बिश्नोई साका करने के लिए तैयार हो गए और 363 से भी ऊपर स्त्री–पुरुषों ने पंथ धर्म या प्रण के लिए बलिदान देकर अपने धर्म की रक्षा की। यह घटना विक्रमी संवत् 1787 की भादवा सुदी दशमी मंगलवार को घटी। जिसका वर्णन गोकल जी कृत साखी में इस प्रकार वर्णित है –

हाकिम मति हरजी हड़ी, देषि ज कीयौ दाव।

डाकर करि डंड मांगिस्यां, इणि विधि करो उपाव।।

विरच कह्यौ वन बाढिस्यां, करस्यां वणी विणास।

पण राखो तो पैसा दियो, दाषै गिरधरदास।।

भंडारी भ्रमै मतै, विण वाद र बेकांम।

सिर सौंपां रौषां सटै, म्हे टुकड़ो न द्यां दांम।।

दाग लगै जो दांम द्यां, पंथ मां पोणौं होय।

पण राख्यां पांणी चड़ै, कळंक न लागै कोय।।

विरष पड़िया रिष षड़िया, पंथ की पारिख पड़ी।

तागाळां सों तेग बांधी, हाकिम नै हतिया चड़ी।।

सतरासै सतियासियै, दसवीं मंगळवार।

भादव सुदि साधू षड़्या, षरतर षंडा धार।।

आयो त मारै वेग सारै, दया पालै देषतां।

तीनि सै त्रेसिठि ऊपरि, पंथ पूरो पेषतां।।

ओ तागो सैंसारि जुग मां जोर वषांणा।

सति मानै सुरतांण, राजा राव वषांणा।।

राव वषांणै सति जांणै, जीव काया राषै जुवो।

षरा षोटा खबरि लाभै षेजड़ली षळकट हुवौ।

जति कुळ की त्याति निहंचै, पंथ पर काजै मिल्यो।

गुंण गूंथि गोकळ कहै साषी षेजड़ली षळकट सांभल्यौ।।

खेजड़ली साके से संबंधित उल्लेख बिश्नोइयों के बहीभाटों के बहियों में भी इस घटना का विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है। माननीय उच्च न्यायालय राजस्थान, जोधपुर में साके से संबंधित याचिका दायर हुई। तब बहीभाटों ने अपनी बहियों से खेजड़ली के खंडाणे में शहीद हुए 84 गांवों के 69 महिलाओं एवं 294 पुरुषों की उम्र, गोत्र एवं अन्य सारी जानकारियां दस्तावेजों सहित न्यायालय में प्रस्तुत की। न्यायालय ने तात्कालिक अन्य सारे सबूतों के गहन अन्वेषण के बाद इस साके को प्रमाणित माना तथा इसे ऐतिहासिक साका करार दिया। उसके पश्चात् खेजड़ली में प्रतिवर्ष 363 शहीदों की स्मृति में भादवा सुदी दशमी को विशाल पर्यावरणीय शहीद स्मृति मेला भरता है। एवं 363 स्त्री–पुरुषों के उम्र, नाम एवं गोत्र की शिला पट्टी भी मुद्रित है। शहीद स्मारक पर प्रतिवर्ष लाखों पर्यावरणीय प्रेमी उन्हें अपनी श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हैं। इस खडांणे के अतिरिक्त वन्य जीवों की रक्षार्थ आत्म–बलिदान की बहुत सारी घटनाएं हुई हैं।

पर्यावरणीय खतरों का आभास जाम्भोजी को साढ़े 500 वर्ष पूर्व ही हो गया था। उन्होंने अपने अनुयायियों को एवं अपनी शिक्षाओं में व्यक्ति को प्रकृति के अनुकूल जीवन यापन की पद्धति प्रदान की। वह जीवन यापन की पद्धति मानव के कल्याण एवं प्रकृति के पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित बनाए रखने में कारगर साबित होती है। उन्होंने वन एवं वन्य प्राणियों के ही संरक्षण का आदेश नहीं दिया बल्कि प्रकृति में निहित हर तत्त्व एवं सजीव जगत के हर प्राणी में ब्रह्म का वास बताते हुए उसकी महत्ता को स्वीकार किया। इन्होंने आर्यों की मूल वैदिक संस्कृति जो प्रकृति आधारित थी, उसे अपनाते हुए प्रत्येक अनुयायी को प्रकृति की शुद्धता के लिए अपने जीवन में प्रतिदिन हवन का आदेश दिया। हवन की जटिल प्रक्रियाओं से परे उन्होंने "होम" शब्द प्रयुक्त करते हुए अपने अनुयायियों को आदेश दिया कि प्रतिदिन सुबह–शाम हवन अवश्य करें –

होम हित चित्त प्रीत सूं होय बास बैकुण्ठा पावो।

जाम्भोजी ने अपने अनुयायियों को जीवन जीने के लिए 29 धर्मों की एक आचार–संहिता प्रदान की। उसी आचार–संहिता में एक महत्त्वपूर्ण धर्म नियम "होम हित चित्त प्रीत सूं होय बास बैकुण्ठा पावो" ही है। होम हवन का ही छोटा रूप है। जो सभी के हित के लिए अर्थात् प्राणी मात्र के हित के लिए सचेत होकर प्रेम भाव से करने का आदेश है। केवल हवन करना ही पर्याप्त नहीं है। हवन करने के साथ–साथ हित, चित्त और प्रीत की भावना भी जुड़ी हुई होनी चाहिए। ऐसी पवित्र भावना द्वारा किया गया कर्तव्य कर्म कभी भी बंधन में डालने वाला नहीं होगा। यज्ञ के अवसर पर हम घृत आदि की आहुति अग्नि देवताओं को समर्पित करते हैं। वह 'स्वाहा' द्वारा दी गई आहुति सभी देवताओं के मुख में प्रविष्ट करती है, जिससे देवता तृप्त होते हैं। तो सम्पूर्ण विश्व की तृप्ति हो जाती है। उस आहुति के बदले प्रकृति और देवता हमें प्रसन्नतापूर्वक स्वास्थ्य एवं समृद्धि प्रदान करते हैं। ये प्राकृतिक देव सूर्य, चन्द्र, वायु, जल, आकाश एवं पृथ्वी आदि जब प्रसन्न हो जाते हैं तो मृत्यु लोक के सभी प्राणी दैविक, भौतिक तापों से छुटकारा पा जाते हैं। वेदों में कहा गया है कि "स्वर्ग कामो यजते" स्वर्ग सुख की कामना वाला यज्ञ करें तथा प्राचीन काल में आर्य जीवन संस्कृति में हवन का बड़ा महत्त्व बताया गया है। विश्व में यज्ञों के स्वरूप का वर्णन वैदिक संस्कृति एवं वेदों में उल्लेखित है। विश्व में जो सृजन निर्माण और विकास की अविरल धारा बह रही है तथा मन, प्राणी और भूत का जो अविरल संयोग वियोग हो रहा है, यही यज्ञ है। मानव शरीर में जीवित रहने और सांस लेने की क्रिया भी यज्ञ है। इस विश्वव्यापी यज्ञ के साक्षात्कार के लिए प्रतीकों के रूप में भौतिक यज्ञों का विधान है जो मन्त्रों का विषय है। ये यज्ञ मनुष्य और प्रकृति के बीच प्रतीकों का सेतु बनाते हैं। इनसे मनुष्य प्रकृति से नाता जोड़ता है और उसकी शक्तियों का उपयोग करने की क्षमता प्राप्त करता है। शतपथ ब्राह्मण कहता है कि ऋक् पृथ्वी है, यजु अन्तरिक्ष है और साम् द्युलोक है। अतः इनमें विहित उपचारों के द्वारा अर्थात् अग्नि, पृथ्वी और सूर्य के आह्वान द्वारा मनुष्य इन तीनों लोकों को जीत लेता है।

वैदिक आर्य अपने देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए दो तरीकों से पूजा उपासना करते थे। एक प्रार्थना एवं स्तुति द्वारा और दूसरी यज्ञों के द्वारा। यज्ञ उनकी उपासना का मुख्य अंग था। इसलिए ऋग्वैदिक धर्म को यज्ञ धर्म कहा जाता है। यज्ञों में अन्न, घी तथा सुगंधित सामग्री की आहुति देकर आर्य अपने देवताओं से लम्बी आयु, पुत्र–पौत्र, धन–धान्य की प्राप्ति तथा शत्रुओं का विनाश करने की प्रार्थना करते थे। आरंभ में प्रत्येक आर्य यजन कार्य स्वयं करते थे। परन्तु बाद में ब्राह्मण पुरोहित की सहायता ली जाने लगी। ऋग्वेद में बृहत् एवं व्ययात्मक यज्ञों का भी उल्लेख मिलता है। जो प्रायः राजाओं एवं धनी व्यक्तियों द्वारा ही कराए जाते थे। आर्यों का एक वर्ग यज्ञ के स्थान पर स्तुति को अधिक महत्त्व देता था। ऋग्वैदिक आर्य देव पूजा के साथ–साथ अपने पितरों की भी पूजा करते थे। ऋग्वैदिक आर्य यज्ञ और स्तुति के साथ–साथ नैतिकता के विकास के लिए भी प्रार्थना करते थे। वे सद्गुणों की वृद्धि पर जोर देते थे। जादू, टोना, टोटका, धोखा, व्यभिचार आदि को पाप समझते थे। ऋग्वेद में पाप–पुण्य और स्वर्ग नरक की कल्पना भी मिलती है। उत्तर वैदिक काल में यज्ञ अत्यधिक जटिल एवं खर्चीले हो गए तथा आम व्यक्ति की पहुँच से परे हो गए। जाम्भोजी ने इन्हीं जटिलताओं से परे एवं आम आदमी की पहुँच वाले हवन होम को महत्त्व दिया तथा कर्मकांडी ब्राह्मणों के एकाधिकार को समाप्त करते हुए होम को प्रत्येक व्यक्ति के स्वास्थ्य एवं समृद्धि के लिए अनिवार्य बताया।

❑❑❑

*** Corresponding Author:**
अशोक धारणिया, शोधार्थी
डॉ. पूजा धमीजा, *शोध निदेशक*
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान
Email: rajaramdharniaauto@yahoo.com, Mob. - 9413388479